P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-8* April- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

पाली जिले में औद्योगीकरण का स्तर (एक भौगोलिक अध्ययन)

सुनील कुमार शर्मा
सह आचार्य,
भूगोल विभाग,
एस. पी. सी. राजकीय महाविद्यालय,
अजमेर, राजस्थान

सारांश

राजस्थान में हुई औद्योगिक प्रगति से प्रादेशिक असंतुलन बढ रहा है। आज कोटा, जयपुर, अलवर, भीलवाडा आदि जिले औद्योगिक द्वष्टि से विकसित होते जा रहे है। पाली जिला राजस्थान के द.पश्चिमी भाग में स्थित महत्वपूर्ण जिला है औद्योगिक द्वष्टि से राजस्थान में इसका महत्वपूर्ण स्थान है। प्रस्तुत शोध पत्र में जिले के तीव्र औद्योगिक विकास की संभावना को देखते हुए विभिन्न आधारों पर औद्योगीकरण के स्तर का मापन कर औद्योगिक विकास हेतु सुझाव देने का प्रयास है।

मुख्य शब्द : औद्योगीकरण, तहसील, औधोगिक श्रमिक, कृषि श्रमिक, अनुपात, कार्यशील जनसंख्या, स्तर, गहनता, केन्द्रीकरण, अक्षांश, देशान्तर।

प्रस्तावना

आजादी के पश्चात राजस्थान का औद्योगिक विकास राजस्थान की अर्थव्यवस्था के एक मजबूत अंग के रूप में उभरा है। आज औधोगिक विकास के कारण ही राजस्थान में रोजगार, उत्पादन एवं निर्यात में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। उच्च औद्योगिक स्तर वाले क्षेत्रो में व्यक्तियों का जीवन स्तर अनेक सुविधाओं के उपलब्ध रहते उच्चतर है। निश्चित रूप से किसी क्षेत्र के औद्योगीकरण के स्तर में वृद्धि हेतु शिक्षित – प्रशिक्षित श्रम, नवीन वैज्ञानिक तकनीक, परिवहन व संचार, प्रबन्धन एवं सरकारी नीतियों का महत्वपूर्ण योगदान होता है। औद्योगीकरण के स्तर में वृद्वि के साथ – साथ पर्यावरण को किसी प्रकार का नुकसान न पहुँचे यह विशेष ध्यान रखने योग्य तथ्य है। अत औद्योगीकरण के प्रादेशिक असंतुलन एव पर्यावरण प्रदूषण से बचने के लिए उचित औद्योगिक स्थिति का चयन करना अति आवश्यक है तब ही औद्योगीकरण के स्तर में वृद्धि मानव समाज के लिए सार्थक सिद्व होगी।

औद्योगीकरण के स्तर का मापन सरल कार्य नही है विभिन्न विद्वानो ने इसके मापन के भिन्न –भिन्न आधार माने है। प्रस्तुत शोधपत्र में लक्ष्य प्राप्ति के लिए विभिन्न आधारों पर जिले के औद्योगीकरण के स्तर व गहनता के मापन का प्रयास रहा है। जिले में पल्लवित औद्योगीकरण का ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता ने इस जिले का चयन किया है।

अध्ययन क्षेत्र

पाली जिला राजस्थान के द.पश्चिम में स्थित है जिले का अक्षांशीय विस्तार $24^{\circ}45'$उत्तरी अक्षांश से $26^{\circ}29'$ उत्तरी अक्षांश तथा देशान्तरीय विस्तार $72^{\circ}47'$ पूर्वी देशान्तर से $74^{\circ}18'$ पूर्वी देशान्तर के मध्य है। उत्तर से दक्षिण इसकी अधिकतम लम्बाई 192 कि.मी एवं पूर्व से पश्चिम अधिकतम चौडाई 166 कि.मी है। जिले का कुल क्षेत्रफल 12387 वर्ग किमी है जो कि राज्रस्थान के क्षेत्रफल का 3.62 प्रतिशत है। राजस्थान के आठ जिलो से इसकी सीमा टकराती है उत्तरी सीमा नागौर व जोधपुर से द.पू.सीमा उदयपुर व राजसंमद, उ.पू. सीमा अजमेर, पश्चिमी सीमा बाडमेर व सिरोही तथा द.प. सीमा जालौर से मिलती है।

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-8* April- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

अध्ययन क्षेत्र

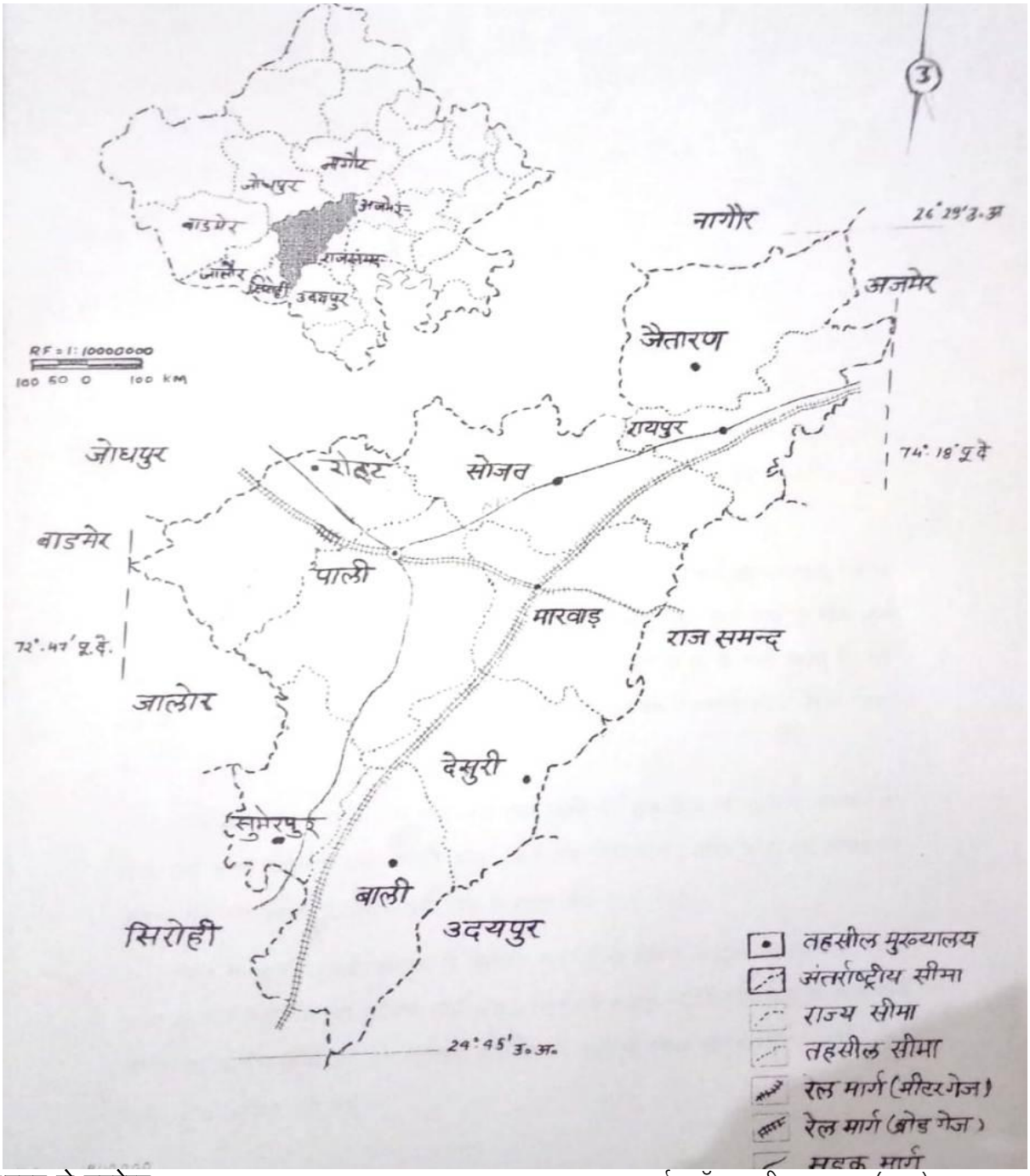

अध्ययन के उद्देश्य

1. अध्ययन क्षेत्र में स्थापित उद्योगों का वर्गीकरण व उनमें संलग्न श्रमिको का विश्लेषण करना।
2. औद्योगीकरण के स्तर व गहनता का मापन कर औद्योगिक विकास हेतु सुझाव देना।

साहित्यावलोकन

शर्मा. डॉ. सुनील कुमार (2000) द्वारा पाली जिले में औद्योगिक विकास एवं पर्यावरण समस्या और निवारण पर किये गये शोध प्रबन्ध का अध्ययन किया गया।

शर्मा. डॉ जगदीश प्रसाद (2004) द्वारा प्रस्तुत शोध पत्र राजस्थान में औद्योगीकरण का स्तर का अध्ययन किया गया।

शर्मा. डॉ. सुनील कुमार (2004) द्वारा प्रस्तुत शोध पत्र पाली जिलें में औद्योगिक प्रदेशों का एक भौगोलिक अध्ययन ।

माथुर. डॉ मिनी (2015) का शोध पत्र इम्प्लीकेशन ऑफ इन्डस्ट्रियल डवलपमेन्ट आन एन्वायरमेण्ट ।

मीना. डॉ जगफूल (2015) का शोध पत्र जनसंख्या वृद्धि एव आर्थिक विकास के स्तर (भीलवाड़ा जिले के सन्दर्भ में)

पटेल डॉ. एल आर (2019) का शोध पत्र औद्योगीकरण से चित्तौड़गढ़ जिले का बदला परिवेश एवं पर्यावरण पर प्रभाव।

उपकल्पनाएं

1 औद्योगिक विकास के अन्तर्गत औद्योगिक स्तर व गहनता में प्रादेशिक असंतुलन स्वाभाविक।

2 औद्योगीकरण का उच्च स्तर जीविका के समुचित अवसर प्रदान करता है।

अध्ययन तकनीक

प्रस्तुत शोध पत्र संमक संग्रह, सारणीयन, गणना, विश्लेषण, और निर्वाचन पर आधारित है। उक्त शोध पत्र में द्वितियक आंकड़ो से प्राप्त परिणामों का आरेख, मानचित्रों आदि तकनीकों द्वारा प्रदर्शन किया गया है। विभिन्न सांख्यिकीय सूत्रों का भी प्रयोग आवश्यकतानुसार किया गया है :–

1 औद्योगीकरण का स्तर –$\frac{\text{औद्योगिक श्रमिक}}{\text{कुल जनसंख्या}} \times 1000$

2 औद्योगिक गहनता–$\frac{x+y}{2}$

x = $\frac{\text{तहसील में कुल इकाईयों की संख्या}}{\text{जिले मे कुल इकाईयों की संख्या}} \times 1000$

y = $\frac{\text{तहसील मे और श्रामिको की संख्या}}{\text{जिले में कुल और श्रमिकों की संख्या}} \times 1000$

पाली जिले में औद्योगीकरण का स्तर

पाली जिले को अधिकांश जनसंख्या का मुख्य व्यवसाय कृषि है लेकिन यह जिला औद्योगीकरण की दृष्टि से भी राजस्थान में महत्वपूर्ण स्थान रखता है जिले के औद्योगीकरण के स्तर का आंकलन करने के लिए निम्न लिखित तथ्यों का विवेचन आवश्यक है।

औद्योगिक व कृषि श्रमिकों का अनुपात

पाली जिले के कृषक और कृषि श्रमिकों की कुल संख्या 480771 है जबकि पारिवारिक उद्योगों के अतिरिक्त उद्योगों में लगे कर्मियों की संख्या 48762 है।

औद्योगिक व कृषि श्रमिकों का अनुपात –2011

क्रसं	तहसील	कृषि कार्य करने वाले	औद्योगिक कार्य करने वाले	अनुपात (प्रतिशत में)
1	जौतारण	72797	2104	2.8
2	रायपुर	59506	3003	5.0
3	सोजत	64167	4807	7.4
4	रोहट	43236	4002	9.2
5	पाली	43501	18943	43.2
6	मा. जंक्शन	59649	3246	5.4
7	देसुरी	53694	4111	7.6
8	सुमेरपुर	30667	4768	15.5
9	बाली	53284	3778	7.0
	पाली जिला	**480771**	**48762**	**10.1**

स्रोत– जिला जनगणना प्रतिवेदन – 2011 (पाली)

यदि कुल कृषि कर्मियों के सापेक्ष मे औद्योगिक कर्मियों का अनुपात निकाले तो यह 10.1 प्रतिशत आता है। यह परिणाम बहुत अच्छी दशा का सूचक नहीं है किन्तु संतोषप्रद माना जा सकता है। सारणी 1.1 से स्पष्ट है कि पाली, सुमेरपुर तहसीलों के अतिरिक्त शेष तहसीलों में यह अनुपात जिले के अुनपात से कम है। जैतारण व रायपुर तहसीलों में यह अनुपात 5 प्रतिशत व इससे भी कम है जो औद्योगिक विकास की कमी का द्योतक है।

औद्योगिक एवं कृषि श्रमिकों का अनुपात –2011
(जिला पाली) प्रतिशत मे

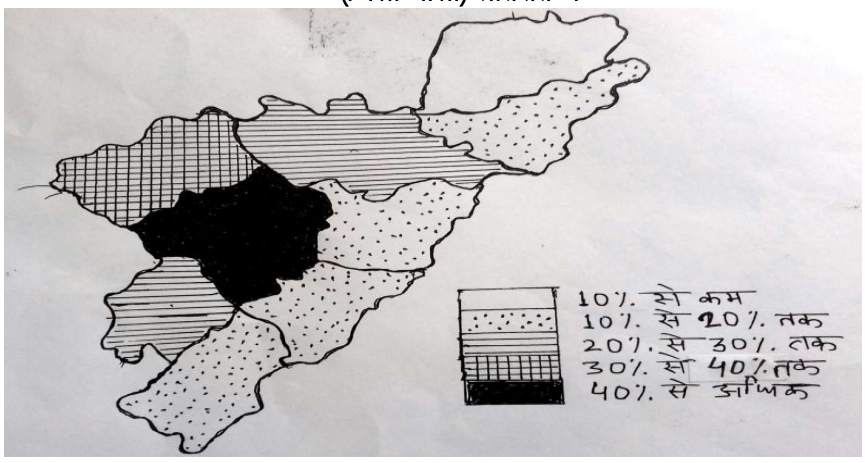

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-8* April- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

कार्यशील जनसंख्या के सापेक्ष में औद्योगिक श्रमिकों का अनुपात

कुल काम करने वालों के अनुपात में औद्योगिक श्रमिकों का जिला स्तर पर अनुपात 8.0 प्रतिशतहै।

औद्योगिक श्रमिकों व कार्यशील जनसंख्या का अनुपात – 2011

क्र.सं	तहसील	मुख्य काम करने वाले	औद्योगिक श्रमिक	अनुपात
1	जौतारण	69302	2104	3.0
2	रायपुर	61841	3003	4.8
3	सोजत	69368	4807	6.2
4	रोहट	42725	4002	9.3
5	पाली	108757	18943	17.4
6	मं. जक्शन	60043	3246	5.4
7	देसूरी	71361	4111	5.7
8	सुमेरपुर	52336	4768	9.1
9	बली	69555	3778	5.4
	पाली जिला	**605288**	**48762**	**8.0**

स्रोत– जिला जनगणना प्रतिवेदन–2011 (पाली)

सारणी 1.2 के अनुसार तहसील स्तर पर यह अनुपात पाली तहसील मे जिला स्तर के अनुपात से बहुत अधिक है जो इस तहसील में अत्यधिक औद्योगिक विकास का द्योतक है। सबसे कम अनुपात जौतारण, रायपुर, मा. जक्शंन, व बाली तहसीलों में क्रमशः 3.0, 4.8, व 5.4 प्रतिशत है जो औद्योगिक विकास के पिछड़ेपन की पुष्टि करता है।

औद्योगिक श्रमिको व कार्यशील जनसंख्या का अनुपात (जिला पाली) प्रतिशत मे

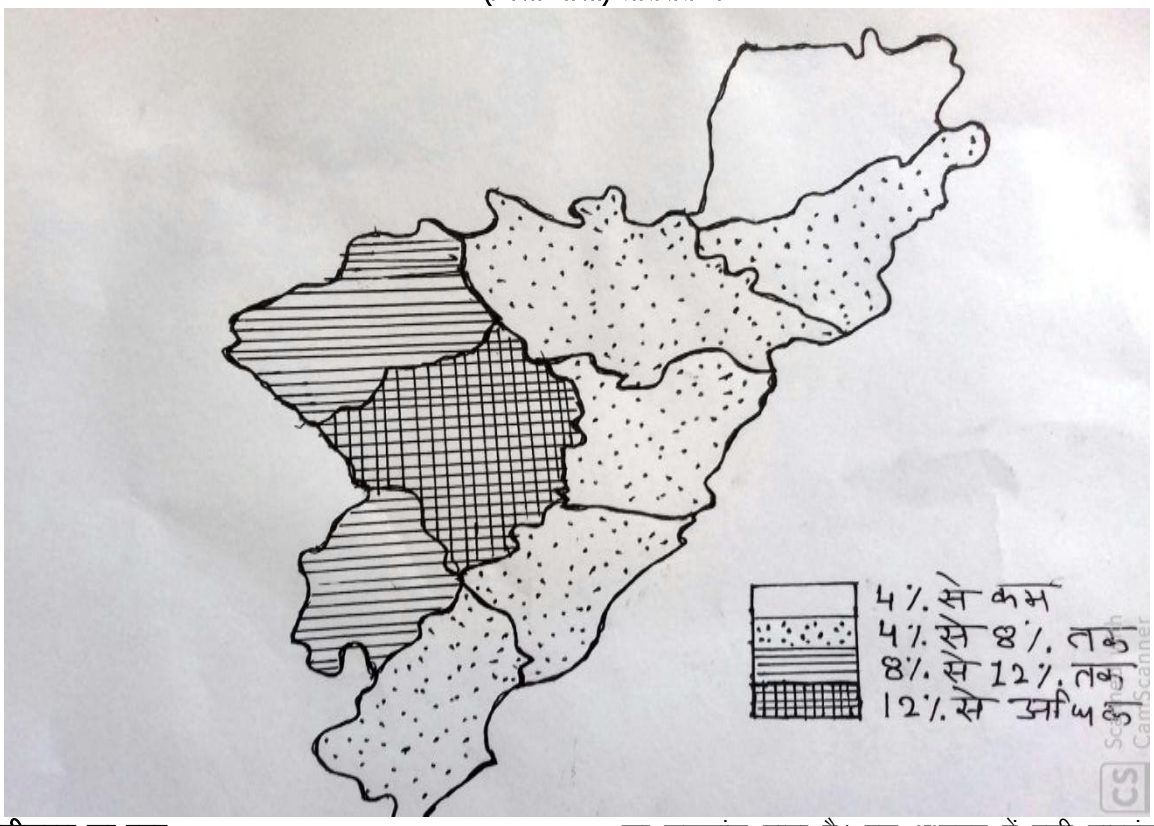

औद्योगीकरण का स्तर

तात्कालिक वर्षो में हगंरी के अनेक आर्थिक भूगोलवेत्ताओं जैसे मार्कोज करोडी और बोरा न औद्योगिक प्रदेशों का अध्ययन किया है। उन्होने प्रति हजार व्यक्ति औद्योगिक श्रमिकों की संख्या को औद्योगीकरण के स्तर का सूचकांक माना है। इस अध्ययन में इसी मापदंड को लेते हुए पाली जिले की विभिन्न तहसीलों में प्रति हजार व्यक्तियों के पीछे औद्योगिक श्रमिकों की संख्या की गणना गई है।

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-8* April- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

औद्योगीकरण का स्तर –2011

क्रस.	तहसील	कुल जनसंख्या	औद्योगिक श्रमिक	औद्योगीकरण का स्तर (प्रति 1000 व्यक्तियों पर औ. श्रमिको की संख्या)
1	जैतारण	226776	2104	9.2
2	रायपुर	205254	3003	14.6
3	सोजत	220854	4807	21.7
4	रोहट	120963	4002	33.8
5	पाली	368386	18943	51.4
6	मां. जक्शंन	198978	3246	16.3
7	देसूरी	234337	4111	17.5
8	सुमेरपुर	198125	4768	24.0
9	बली	263900	3778	14.3
	पाली जिला	**2037537**	**48762**	**23.9**

स्रोत– जिला जनगणना प्रतिवेदन – 2011 (पाली)

सारणी 1.3 के अनुसारपाली तहसील में(51.4) औद्योगीकरण का स्तर उच्चतम पाया गया है द्वितीय स्तर पर रोहट(33.8), सुमेरपुर (24.0) व सोजत (21.7) तहसील है जिनको मध्य श्रेणी के औद्योगीकरण स्तर में सम्मिलित किया गया है। निम्न औद्योगीकरण की श्रेणी में 10–20 औद्योगिक श्रमिक प्रति हजार जनसंख्या वाली तहसीलों को सम्मिलित किया गया है। जिनमें जौतारण, रायपुर, मां. जक्शंन, देसूरी व बाली आदि तहसीले है। चतुर्थ स्थान पर बहुत निम्न कोटि के औद्योगीकरण स्तर को लिया गया है जिसमें 10 से कम श्रमिक प्रति हजार जनसंख्या पर है। इसके अंतर्ग्रत जैतारण तहसील सम्मिलित है। स्पष्ट है कि जिलें में संतुलित विकास की आवश्यकता है क्योकि पाली, रोहट, सुमेरपुर तहसीले तेज गति से विकसित हो रही है किन्तु शेष तहसीलों में विकास की गति धीमी है।

औद्योगीकरण का स्तर –2011
(जिला पाली) प्रति हजार श्रमिक

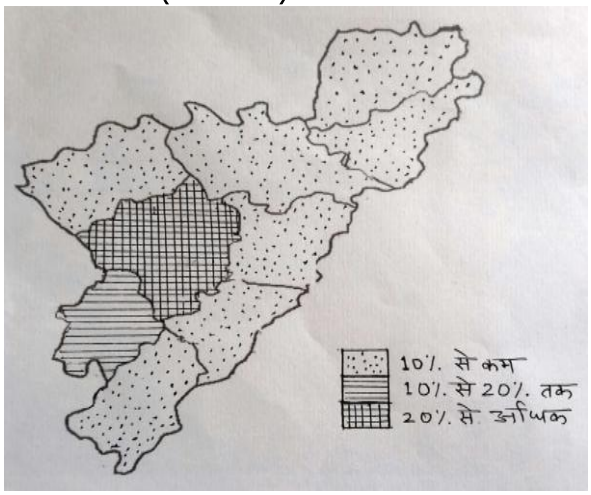

औद्योगिक गहनता

औद्योगिक विकास के स्तर को मापने के लिए अनेक विधियां प्रयोग में ली गई। एल्फ्रेट राईट ने यूनाइटेड स्टेट्स के वस्तु निर्माण औद्योगिक प्रदेशों का सीमांकन करने के लिए वस्तु निर्माण द्वारा होने वाले अतिरिक्त मूल्य संबंधी तथ्यों को आधार माना। कुछ विद्वानों ने शक्ति उपयोग को भी आधार माना है।

औद्योगिक गहनता –2011

क्रस.	तहसील	X	Y	$\frac{x+y}{2}$
1	जैतारण	3.8	4.3	4.05
2	रायपुर	5.4	6.2	5.80
3	सेजत	8.1	9.8	8.95
4	रोहट	10.3	8.2	9.20
5	पाली	40.2	38.8	39.50
6	मां. जक्शंन	4.5	6.6	5.55
7	देसूरी	7.9	8.4	8.1
8	सुमेरपुर	10.9	9.7	10.3
9	बाली	8.9	7.4	8.1

स्रोत–जिला उद्योग केन्द्र–(पाली)

मंडल के द्वारा प्रयोग में ली गई विधि को प्रस्तुत अध्ययन में प्रयोग में लिया गया है। सारणी 1.4 से स्पष्ट है कि पाली तहसील में औद्योगिक गहनता सर्वाधिक (39.5 प्रतिशत) है। मध्यम स्तर की औद्योगिक गहनता रोहट व सुमेरपुर तहसील में, शेष छः तहसीलो में से तीन तहसील सोजत, बाली व देसूरी मे औद्योगिक गहनता स्तर निम्न श्रेणी का है जबकि जैतारण, रायपुर और मां. जंक्शन तहसीलो मे गहनता का स्तर अत्यंत निम्न स्तर का है। इस गहनता को फैक्ट्रियों की संख्या में वृद्धि करके बढ़ाया जा सकता है।

औद्योगिक गहनता–2011
(जिला पाली) प्रतिशत मे

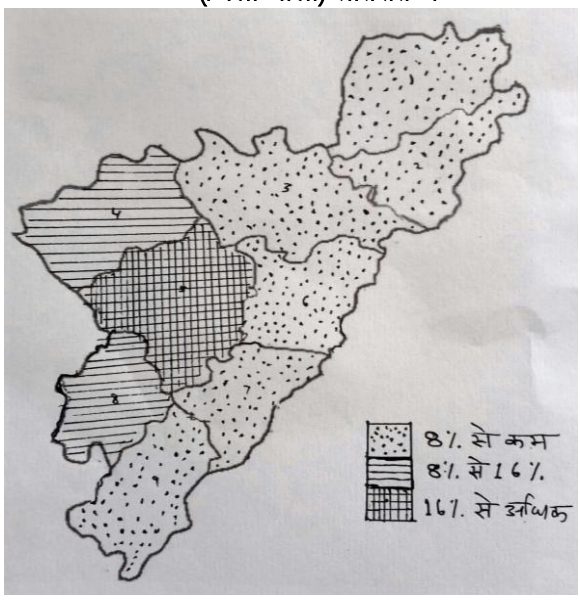

निष्कर्ष व सुझाव

निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि जिले के सुनियोजित व संतुलित विकास हेतु औद्योगीकरण के स्तर व गहनता के आधार पर निम्न स्तर की तहसीलों के अन्तर्गत आने वाले क्षेत्रो पर औद्योगिक विकास हेतु विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। जैतारण, रायपुर, मारवाड़ जंक्शन व देसूरी तहसीलों मे औद्योगीकरण व गहनता का स्तर बहुत कम है।

पाली जिला प्रकृति प्रदत्त, आर्थिक संसाधनों से सम्पन्न है। संसाधनो की प्रचुरता और विविधता होते हुए भी इनका भरपुर दोहन अनेक कारणों से नही हो सका। किन्तु प्राकृतिक संसाधन एवं नियोजित औद्योंगिक विकास हेतु पश्चिमी भाग में सडको का विस्तार जोधपुर – व्यावर, पाली, मां. जंक्शन रेल मार्गे का निर्माण, खनिजो का सद्यन सर्वेक्षण एवं खनिज आधारित सीमेंट आदि उद्योगों का विकास, कृषि विकास, रंगाई – छपाई इकाईयां का आधुनिकरण, निम्न औद्योगिक गहनता वाली तहसीलो में तीव्र औद्योगिक विकास हेतु फैक्ट्रियों की संख्या मे वृद्धि की गई, रायपुर, जैतारण, देसूरी और मां. जंक्शन तहसीलो में औद्योगिक श्रमिकों की संख्या बढ़ाना एवं पशुधन सं उपलब्ध उत्पादों यथा ऊन, हड्डियाँ, खाल व दूध पर आधारित बड़ें उद्योगों की स्थापना आदि आवश्यक है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *कौशिक, एम.डी, गौतम अल्का (2010) ससाधन भूगोल, रस्तोगी एण्ड रस्तोगी*
2. *तिवारी राम कुमार (2017) जनसंख्या भूगोल, प्रवालिका प्रकाशन*
3. *ओझा, बी. एल (2014), राजस्थान की अर्थव्यवस्था, रमेश बुक डिपो , जयपुर*
4. *शर्मा. एच. एस (2017), राजस्थान का भूगोल, पंचशील प्रकशन, जयपुर*
5. *राव. बी .सी (2016), आर्थिक भूगोल, वसुन्धरा प्रकाशन, गोरखपुर*
6. *सिंह एण्ड सिंह, जगदीश (2013), आर्थिक भूगोल के मूल तत्व, राधा प्रकाशन दिल्ली*
7. *कुमार. प्रमिला, शर्मा. कमल (2012), औधोगिक भूगोल, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल*
8. *लोढा, राजमल (2009), प्रौद्योगिक भूगोल , राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर*
9. *शर्मा, जे.पी (2017) प्रायोगिक भूगोल, रास्तोगी प्रकाशन, मेरठ*
10. *नागर. के .एन (2018) सांख्यिकी के मूल तत्व , रस्तोगी प्रकशन, मेरठ*
11. *जिला जनगणना प्रतिवेदन, 2011 (पाली)*
12. *जिला उद्योग केन्द्र, पाली*